Philosophy 2nd year

PAGE
DATE 17/4/20

Q.1 भारतीय दर्शन का एक संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर. अंग्रेजी में फिलोसफी (Philosophy) का शाब्दिक अर्थ ज्ञान-प्रेम ही होता है। भारतीय परिदृश्य में Philosophy को दर्शन कहा जाता है। दर्शन शब्द दृश धातु से बना है जिसका अर्थ है जिसके द्वारा देखा जाए। वस्तुतः भारतीय दर्शनशास्त्र ज्ञान की उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का साक्षात्कार हो सके। भारतीय दर्शन केवल तत्व की बौद्धिक व्याख्या से संतुष्ट नहीं होता बल्कि वे तत्व की अनुभूति प्राप्त करना चाहते है।

भारतीय दर्शन को तत्व दर्शन भी कहा जाता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में दर्शन का सृजन जीवन की समस्याओं के हल के लिए हुआ है। वस्तुतः भारत में ज्ञान की चर्चा ज्ञान के लिए न होकर मोक्षानुभूति के लिए हुई है। अतः भारतीय दर्शन को मोक्ष दर्शन भी कहा जाता है।

Q.2 भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन में मुख्य अंतर क्या हैं?

उत्तर

1. भारतीय दर्शन व्यावहारिक है।	1. पाश्चात्य दर्शन सैद्धान्तिक है।
2. भारतीय दर्शन का जन्म आध्यात्मिक असंतोष से हुआ है।	2. पाश्चात्य दर्शन का जन्म आश्चर्य से हुआ है।
3. भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण धार्मिक है।	3. पाश्चात्य दर्शन दृष्टिकोण वैज्ञानिक है।
4. भारतीय दर्शन संश्लेषणात्मक है।	4. पाश्चात्य दर्शन विश्लेषणात्मक है।

Scanned with CamScanner

PAGE
DATE

Q. 3. भारतीय दर्शन में कर्म सिद्धांत के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- कर्म सिद्धांत में विश्वास भारतीय दर्शन की एक मुख्य विशेषता है। चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दर्शन चाहे वे वेद विरोधी हो या वेद के अनुकूल, कर्म के नियम को स्वीकार करते हैं। अतः कर्म सिद्धांत छः आस्तिक दर्शन एवं दो नास्तिक दर्शन भी स्वीकार करते हैं। कर्म सिद्धांत का अर्थ है कि जैसा हम बोते हैं वैसा ही हम काटते हैं। कहने का तात्पर्य है, अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरा होता है। हम सदा कर्मों के फल होते रहते हैं। अतः सुख और दुःख क्रमशः शुभ एवं अशुभ कर्मों का अनिवार्य फल माने गए हैं। अतः कर्म सिद्धांत कारण-नियम है जो नैतिकता के क्षेत्र में काम करता है। दार्शनिकों का कहना है हमारा वर्तमान जीवन अतीत के कर्मों का फल है। इस तरह कर्म-सिद्धांत के अतीत, वर्तमान, और भविष्य जीवन को कारण-कार्य में बांधा गया है।

प्रश्न-4 भारतीय दर्शन के आस्तिक सम्प्रदाय के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर:- भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय के दो भागों में बांटा गया है, आस्तिक और नास्तिक।
व्यवहारिक जीवन में आस्तिक का अर्थ है ईश्वरवादी तथा नास्तिक का अर्थ अनीश्वरवादी। ईश्वरवादी का मतलब ईश्वर में आस्था रखने वाला। किन्तु दार्शनिक विचार धारा में आस्तिक शब्द का प्रयोग इस अर्थ में नहीं हुआ है। भारतीय विचार धारा में आस्तिक उसे कहा जाता है जो

वेद में विश्वास करता होता है इस प्रकार आस्तिक का अर्थ है वेद का अनुयायी। भारतीय दर्शन में छः आस्तिक दर्शन माना जाता है, वे है।

1. न्याय दर्शन
2. वैशेषिक दर्शन
3. सांख्य दर्शन
4. योग दर्शन
5. मीमांसा दर्शन
6. वेदान्त दर्शन

ये सभी दर्शन किसी न किसी रूप में वेद पर आधारित है।

Q.5 नास्तिक सम्प्रदाय के बारे में आप क्या जानते है

उत्तर: व्यवहारिक जीवन में नास्तिक उसे कहा जाता है जो ईश्वर का विरोध करता है। भारतीय दार्शनिक विचार धारा में नास्तिक शब्द का प्रयोग इस अर्थ में नहीं हुआ है, यहाँ नास्तिक उसे कहा जाता है जो वेद में विश्वास नहीं रखते हैं। नास्तिक दर्शन के अन्दर तीन दर्शन आते हैं जो निम्नलिखित

(1) चार्वाक दर्शन
(2) जैन दर्शन
(3) बौद्ध दर्शन।

X